Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 02, (जुलाई, 2025)
पृष्ठ संख्या 28–30

बरसात के मौसम में पशुओं को होने वाले प्रमुख रोग तथा उसका नियंत्रण

डॉ. अजीत सिंह[1], डॉ. अश्वनी कुमार सिंह[1], डॉ. यासिर अजीज तंबोली[1], डॉ. वैशाली चतुर्वेदी[2] एवं डॉ. एम. के. यादव[1]

[1]सहायक प्राध्यापक, स्कूल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज,
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर–302017
[2]सहायक प्राध्यापक,
स्कूल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज,
सुरेश ज्ञान विहार यूनिवर्सिटी, जयपुर–302017, भारत।

Email Id: –drajeet.singh@jnujaipur.ac.in

बरसात के मौसम में वातावरण में उपस्थित आद्रता और हर स्थान पर वर्षा का जल एकत्रित हो जाने के कारण पशुओं में कई संक्रामक और परजीवी जनित रोग उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है। अतः पशु पालक को बरसात के मौसम में पशुओं में होने वाले प्रमुख रोगों की सामान्य जानकारी होना अति आवश्यक है।

पशुओं में बरसात के मौसम में फैलने वाले रोग:

(1). गलघोटू (हेमोरेजिक सेप्टीसीमिया):–

यह रोग बरसात के मौसम में सभी जुगाली करने वाले पशुओं को संक्रमित करता है। मुख्य रूप से गए और भैंस में तेज बुखार का आना गले के निचले भाग में सूजन सांस लेने में तकलीफ होना इस रोग के प्रमुख लक्षण है। इस रोग के कारण दम घुटने पर अचानक पशुओं की मृत्यु भी हो जाती है।

(2). थनैला रोग (मैस्टाइटिस):–

बरसात के मौसम भीगा हुई और गंदी जगह पर रहने से दूध देने वाले पशुओं के थानों में सूजन और संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है। थनैला रोग से पशुओं द्वारा दूध का उत्पादन तो कम होता ही है साथ ही उसकी गुणवत्ता पर भी असर पड़ता है।

थनैला रोग रोग के लक्षण

(3). खुरपका तथा मुंहपका (फुट एंड माउथ डिजीज):–

यह रोग अत्यंत संक्रामक होता है तथा विषाणु जनित होता है। यह रोग गाय, भैंस, भेड़ और बकरी में फैलता है।

खुरपका तथा मुंहपका रोग के लक्षण

(4). कृष्णजंघा (ब्लैक क्वार्टर):–

कृष्णजंघा मिट्टी में पैदा होने वाला एक घातक जीवाणुजनित रोग है। यह मुख्य रूप से गाय और भैंस की मांसपेशियों में गैस से भरी हुई सूजन और दर्द के रूप में दिखाई देता है। इसके साथ ही इस रोग से ग्रसित पशुओं में लंगड़ापन, मांसपेशियों पर काले धब्बे तथा जिस स्थान पर सूजन मौजूद होती है वहां मांसपेशियों में गैस भरी होती है। कृष्णजंघा को लंगड़ा बुखार, जहरबाद, कालाबाय, एकटंगा एवं लंगड़िया आदि नाम से भी जाना जाता है।

कृष्णजंघा (ब्लैक क्वार्टर) रोग के लक्षण

(5). एंथ्रेक्स:–

एंथ्रेक्स रोग पशुओं से मनुष्यों एवं मनुष्यों से पशुओं में भी फैल सकता है। एंथ्रेक्स एक जीवाणुजनित रोग है जो पशुओं में तेज बुखार, शरीर में सूजन के साथ–साथ बाह्य शारीरिक छिद्र से रक्त निकलने जैसे लक्षण पैदा करता है।

(6). लंगड़ापन:–

बारिश के मौसम में जमीन गीली होने के कारण रास्ते में आवागमन होने से बहुत ही कीचड़ जमा हो जाती है। पशु जब इन कीचड़ से भरे हुए रास्तों पर जाते हैं तो पशुओं के खुरों में संक्रमण हो जाता है। इस संक्रमण के फलस्वरुप पशुओं के चलने में समस्या होती है तथा यह लंगड़ाने लगते हैं।

(7). परजीवी संक्रमण:–

बरसात के मौसम में नमी युक्त वातावरण तथा जगह–जगह पानी एकत्रित होने के कारण जूँ, खटमल, मक्खी, मच्छर आदि उत्पन्न होते हैं। यह पशुओं की त्वचा पर खुजली, एनीमिया और कमजोरी जैसे लक्षण उत्पन्न करते हैं।

(8). पाचन संबंधी रोग:–

जब पशुपालकों द्वारा पशुओं को अधिक मात्रा में हरा चारा खिला दिया जाता है या फिर पशुओं द्वारा जब दूषित पानी या खराब गुणवत्ता का चारा उपयोग कर लिया जाता है तो पशुओं में कई समस्याएं जैसे दस्त, अफरा, अपच, पेट फूलने एवं खाद्य विषाक्ता जैसी समस्याएं होने की संभावना भी बढ़ जाती है।

(9). चर्म रोग:–

बरसात के मौसम में गीलेपन के कारण पशुओं के त्वचा पर कवक के संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है। इसके

साथ ही पशुओं की त्वचा पर घाव तथा खुजली की संभावना भी बढ़ जाती है।

(10). श्वास संबंधी रोगः–

बरसात के मौसम में पशुओं में श्वास संबंधी समस्याओं की काफी संभावना होती है। वातावरण में नमी और ठंडक के कारण पशुओं के फेफड़े तथा ऊपरी श्वास नली में संक्रमण (सूजन) हो जाता है जिसके फलस्वरुप निमोनिया और ब्रोंकाइटिस जैसे स्वास्थ्य श्वास रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

(11). लेप्टोस्पायरोसिसः–

यह जीवाणु जनित रोग दूषित मिट्टी और पानी के संपर्क में आने से दुधारू पशुओं में दूध के उत्पादन में अचानक से कमी हो जाती है। इसके साथ ही इस रोग से ग्रसित पशुओं में थन ढीला और नरम हो जाता है, कोलेस्ट्रॉल जैसा दूध आने लगता है। इसके अतिरिक्त भूख कम लगना, सुस्ती बनी रहना, शरीर में अकड़न के साथ बुखार आना, गर्भपात की भी समस्या बनी रहती है।

(12). कोक्सीडियोसिसः–

यह प्रोटोजोआ जनित रोग विशेष रूप से बछड़ों और मेमनों में पाया जाता है जिससे दस्त और शारीरिक वृद्धि में कमी आती है।

पशुओं के रोगों के नियंत्रण का उपायः–

बरसात के मौसम में पशुओं को रोगों से बचने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिएः

1. पशुपालकों द्वारा अपने पशुओं का समय पर टीकाकरण करवा लेना चाहिए जिससे पशुओं को खुरपका तथा मुंहपका, कृष्णजंघा, गलघोटू जैसे रोगों से बचाया जा सके।
2. जिस स्थान पर पशु का आवास होता है उस स्थान को साफ–सुथरा और सूखा रखना चाहिए। इस प्रकार से हम पशुओं को होने वाले संक्रमण से बचा सकते हैं।
3. समय–समय पर पशुओं की जांच कराते रहे और यदि कोई लक्षण दिखाई दे तो तुरंत ही चिकित्सक का परामर्श लें और कृमिनाशक दवाइयां का उपयोग करें।
4. पशुओं के आवास के आसपास पानी एकत्रित न होने दें तथा मक्खी, मच्छर को रोकने के लिए पशु चिकित्सक से सलाह लेकर कीटनाशक का प्रयोग करें।
5. फफूंद लगे या सड़ रहे चारे को पशुओं को ना दें। चारे को हवादार और सूखे स्थान पर संग्रह किया जाना चाहिए।